सुभाष मुखोपाध्याय
Subhas Mukhopadhyay

श्री सुभाष मुखोपाध्याय, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित कर रही है, बाङ्ला के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों में से हैं, जिनकी सतत् सर्जनात्मकता ने भारतीय कविता को छह दशकों तक समृद्ध बनाये रखा है।

सुभाष मुखोपाध्याय का पहला ही कविता-संकलन *पदातिक* (1940) साहित्य-जगत में अपने प्रखर स्वर, प्रसरणशील तरुणाई, तकनीक पर कुशल नियंत्रण, अपनी समझ और राजनीतिक सुधारवाद के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता के नाते हाथों हाथ बिक गया। यहाँ तक कि बुद्धदेव बसु इसकी राजनीतिक विचारधारा के बारे में आशंका रखते हुए भी काव्य-भाषा के स्रोतों पर इस युवा कवि की पकड़ से बहुत प्रभावित हुए।

सुभाष उस समय इक्कीस वर्ष के थे। आपका जन्म 12 फ़रवरी 1919 को नदिया ज़िले के कृष्ण नगर में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। आप श्री क्षितीश चंद्र और जामिनीबाला देवी के सबसे छोटे पुत्र थे। आपका प्रारम्भिक जीवन राजशाही में नौगाँव में व्यतीत हुआ और 1930 में असहयोग आंदोलन के दिनों में आप कलकत्ता आ गये। आपकी यह उत्कट इच्छा रही कि मज़दूरों को पूँजीपतियों के शोषण के चंगुल से मुक्त करायें। इसके लिए आपने 1939 में गोदी-मज़दूरों को लेबर पार्टी के झंडे तले संगठित किया। उस समय आपने कविताएँ लिखनी शुरू कर दी थीं, जिसमें यही चिन्ता आवेशपूर्ण भाषा में अभिव्यक्ति हुई। कम्युनिस्ट आंदोलन के साथ आप 1941 में जुड़े और चार दशकों तक उसके साथ बने रहे। 1942 में आप ग़ैर फ़ासीवादी लेखक एवं कलाकार संगठन के संयुक्त मंत्री बने और पार्टी पत्रिका के लिए रिपोर्ट तैयार करने के लिए पूरे बंगाल का भ्रमण किया। 1948 का वर्ष कवि के लिए घटनाबहुल था, क्योंकि इस वर्ष आपकी दूसरी काव्यकृति *अग्निकोण* का प्रकाशन हुआ। इसमें भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को अवैध घोषित करने पर आपका क्रोध और विरोध व्यक्त हुआ है। कम्युनिस्ट गतिविधियों से सम्बन्ध रखने के कारण आप इसी वर्ष दो बार जेल गये—पहली बार तीन महीने के लिए और दूसरी बार दो वर्षों के लिए। *अग्निकोण, पदातिक* की अपेक्षा अधिक कटु था, तथापित काव्य-शैली पर आपका नियंत्रण, जिसे आपने कुछ सोद्देश्य परिवर्तनों के साथ प्रयुक्त किया था, उतना ही दृढ़ था, जितना कि सर्वहारा वर्ग के प्रति आपकी निष्ठा। 1951 में गीता बंद्योपाध्याय के साथ हुई शादी ने आपकी इस प्रतिबद्धता को ज़रा भी कम नहीं किया। अब आप बजबज जूट कर्मचारियों के बीच काम करने और रहने लगे थे। इसी बीच आपका तीसरा कविता-संग्रह *चिरकुट* प्रकाशित हुआ, जिसकी कुछ कवि-

SRI Subhas Mukhopadhyay on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most eminent poets in Bengali whose sustained creativity has nourished Indian poetry for more than six fertile decades.

Subhas Mukhopadhyay's very first collection of poems, *Padatik* (1940) took the literary world by storm by its strident tone, its infectious youthfulness, its supreme command over the technique, its wit and its unconcealed commitment to political radicalism. Even Buddhadeb Basu, despite his apprehensions about its political rhetoric, was tremendously impressed by the young poet's sure hold on the resources of poetic idiom.

Subhas was twenty-one at that time. Born in a middle class family at Krishna Nagar, Nadia on 12 February 1919 as the youngest son of Sri Kshitish Chandra and Smt. Jaminibala Devi, he had spent his early years in Naogaon in Rajsahi and moved over to Calcutta in 1930, during the days of the Non-co-operation Movement. It was his zealous desire to liberate the workers from capitalist exploitation that found him organising dock-labourers under the Labour Party in 1939 by when he had also started writing poems that expressed the same concern in a charged language. His identification with the communist movement that he joined in 1941, stayed with him for more than four decades right upto the early eighties. He became joint Secretary of the Anti-fascist Writers' and Artists' Association in 1942, and toured all over Bengal the following year to report for the Party journal. 1948 was an eventful year for the poet as it saw the publication of his second book of poems, *Agnikon* that reflected his anger and protest at the outlawing of the Communist Party of India, as it also saw him in jail twice for his association with communist activities. First it was a three month term, while the second lasted two years. *Agnikon* was bitterer than *Padatik*; yet his command over the verse form that he used with certain deliberate distortions was as strong as his commitment to the proletarian cause. His marriage with Gita Bandyopadhyay in 1951 did not in anyway dampen his commitment, he now lived and worked among Budge Budge jute workers. He had meanwhile published *Chirkut*, his third

ताओं में बंगाल के प्रखर बिम्ब थे। आप *परिचय* के सम्पादक बने और आपने एक रिपोर्ताज संग्रह *आमार बाङ्ला* और मार्क्स के *वेज, लेबर एंड कैपिटल* पर आधारित *भूतेर बेगार* प्रकाशित कराया। सुभाष मुखोपाध्याय का अगला कविता-संग्रह *फुल फुटुक* (1957) आपके सर्जनात्मक जीवन का महत्त्वपूर्ण मोड़ था। इसमें कविताएँ अधिक संयत और कवि की सहानुभूति अधिक गहरी और व्यापक हुई है। इन कविताओं में तीव्र युयुत्सा के बदले एक मृदुतर मानवतावादी स्वर है, जैसे कि जब आप कहते हैं—"फूल खिले न खिले / यह वसंत है।" काव्य-तकनीक में रूपांतरण का कारण सम्भवतः तुर्की कवि नाज़िम हिकमत का प्रभाव है, जिनका अपने प्रभूत मात्रा में अनुवाद किया है। यह रूपांतरण इस वर्ग की कविताओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है, विशेषकर पद्य से गद्य की ओर बदलाव, शैली की स्पष्टता, शब्दों की मितव्ययिता और रूपकों पर अधिक ज़ोर। यहाँ कविताएँ शब्दाडम्बर से रहित हैं और अपनी संरचना में ही ख़ामोशी लिये हुए हैं। यहाँ कवि आँधी-पानी से शांत रहने को कहता और अपने कामरेडों से अशिष्ट न बनने की अपील करता प्रतीत होता है। वह शाम को सांध्यमणि फूल के खिलने की प्रतीक्षा करता है।

यह नयी संवेदना और सौन्दर्यबोध की पूर्वपीठिका उनमें आगामी वर्षों में बनी रहती है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित *जते दूरेइ जाय* (1962) में शैली और दृष्टि की उल्लेखनीय परिपक्वता दिखायी पड़ती है। सुभाष के आगामी संग्रह *कल मधुमास* (1966) में एक लम्बी आत्मकथात्मक कविता संग्रहीत है, जिसे इस कविता-संग्रह का शीर्षक बनाया गया है। कवि यहाँ चेतावनी देता है कि हम उसे अपने समयमान से न मापें, क्योंकि बदलता हुआ समय हमेशा वैयक्तिक और विशिष्ट होता है। आपके अन्य कविता-संग्रह *ए भाई* (1971), *छेले गेछे बोन* (1972), *एकतु पा चलिये भाई* (1979) और *जल साइते* (1981) आपके असीम मानवतावाद को उजागर करते हैं तथा आशा और निराशा, हास और रुदन, वेदना और खुशी, भविष्य के प्रति उत्कंठा और अतीत-राग के परस्पर विरोधी मिज़ाज को व्यक्त करते हैं। यह भी स्पष्ट है कि सुभाष की कविता महान काव्य की उस दुर्लभ सार्वभौम मानवीय अपील को प्राप्त करने के लिए हर तरह के मताग्रह और क्षेत्रवाद से ऊपर उठी है।

सुभाष मुखोपाध्याय के गद्य में भी उनकी कविता की समूची प्रांजलता और सुंदरता है, जो आपके चार उपन्यासों, चार यात्रा-वृत्तांतों और अन्य विविध लेखन से स्पष्ट है। आप संभार भर की कविता के एक उत्साही और प्रतिभाशाली अनुवादक हैं। आपने हाफिज़, नाज़िम हिकमत, पाब्लो नेरूदा आदि कवियों का अनुवाद किया है। आपने एन्ने फ्रैंक और चे ग्वेरा की डायरियों सहित अनेक गद्य रचनाओं का अनुवाद किया है।

सुभाष ने देश-विदेश में व्यापक भ्रमण किया है। आप ताशकंद, कैरो, बेरूत, (तत्कालीन) जर्मन गणतंत्र, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, वियतनाम और कज़ाकिस्तान की यात्रा कर चुके हैं। आपको अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार, एफ्रो-एशियन लोटस प्राइज़, कुमारन आशान पुरस्कार, मिर्जा तुरसन ज़ेड़ प्राइज़ (सोवियत संघ), कबीर सम्मान, आनंद पुरस्कार, देशिकोत्तम (विश्वभारती की ओर से) और ज्ञानपीठ पुरस्कार शामिल हैं।

बाङ्ला कविता के क्षेत्र में दुर्लभ उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी सुभाष मुखोपाध्याय को अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित करती है। □

collection of poems some of which contained intense images of the Bengal Famine. He had also become the editor of *Parichaya* and published *Amar Bangla*, a collection of reportage followed by *Bhuter Begar* based on Marx's *Wage, Labour and Capital*. *Phul Phutuk*, Subhas's next collection of poems, (1957) was a definite turning point in his career. The poems become more sober and the poet's sympathies become deeper and broader. Loud militancy is replaced by a mellower humanitarian tone as when he states, 'Whether flowers blossom or not. It's spring time.' The influence of the Turkish poet Nazim Hikmet whom he had translated profusely is perhaps responsible for the transformation of poetic technique we witness in this group of poems, especially the change from verse to prose, the terseness of style, greater economy of words, and greater emphasis on metaphors. Poems become shorn of all verbosity and include a silence in their very structure. The poet seems to ask the thunderstorm to be quiet and appeal to his comrades not to be vandals. He waits for the *Sandhyamani* flower to bloom in the evening.

This new sensitivity and the foregrounding of the aesthetic were to stay with him in the years to come. *Jate Durei Jai* (1962) for which Subhas Mukhopadhyay received the Sahitya Akademi award shows a remarkable maturity of style and vision. Subhas's next collection, *Kal Madhumas* (1966) includes a long autobiographical poem that gives the book its title. The poet here warns us not to measure him in our time-scale since the changing time is always individual and specific. His other major collections like *Ei Bhai* (1971), *Chhele Gechhe Bone* (1972), *Ektu Pa Chaliye Bhai* (1979) and *Jal Saite* (1981) reveal his profound humanism and articulate the contradictory moods of hope and despair, humour and pathos, pain and pleasure, passion for the future and nostalgia for the past. It is also evident that Subhas's poetry rises above all forms of dogmatism and sectarianism to achieve that rare universal human appeal of all great poetry.

Subhas Mukhopadhyay's prose has all the lucidity and beauty of his poetry as exemplified by his four novels, four travelogues and other miscellaneous writings. He has also been a passionate and brilliant translator of poetry from all over the globe. The poets he has translated include Hafiz, Nazim Hikmet, and Pablo Neruda. He has also translated several works of prose including the diaries of Anne Frank and Che Guevara.

Subhas has been a great globe-trotter. Tashkent, Cairo, Beirut, (erstwhile) G.D.R., Hungary, Czechoslovakia, Romania, Vietnam and Kazakhistan are some of the places his poetry took him to. The many awards and honours Subhas received include Sahitya Akademi award, Afro-Asian Lotus prize, Kumaran Asan award, Mirzo Tursun Zade prize (USSR), Kabir Samman, Ananda Puraskar, Desikottam (from Viswabharati) and Jnanpith.

For his rare excellence as a poet in Bengali, Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship on Subhas Mukhopadhyay. □